इकाई 6 यात्रा लेखनः विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 यात्रा लेखक की योग्यता

6.3 यात्रा स्थल का चयन

6.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

6.3.2 यात्रा की प्रासंगिकता और महत्व

6.4 सामग्री का संकलन

6.4.1 यात्रा–पूर्व अध्ययन

6.4.2 यात्रा की तैयारी

6.4.3 तथ्यों का संकलन

6.4.4 अन्य सामग्री

6.5 सामग्री का संयोजन और संपादन

6.6 यात्रा लेखन की प्रस्तुति

6.6.1 आरंभ

6.6.2 मध्य

6.6.3 अंत एवं शीर्षक

6.7 भाषा एवं शैली

6.8 सारांश

6.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

समाचार पत्र और फीचर लेखन से संबंधित इस छठी इकाई में आप यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यात्रा लेखक के लिए आवश्यक योग्यता को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- सही यात्रा–स्थल का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- यात्रा के लिए आवश्यक तैयारी कर सकेंगी/सकेंगे;
- यात्रा के दौरान एकत्र सामग्री का लेखन के लिए संयोजन और संपादन कर सकेंगी/सकेंगे;
- यात्रावृत्त लिख सकेंगी/सकेंगे और
- इसके लिए उपर्युक्त भाषा–शैली का प्रयोग कर सकेंगी/सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठयक्रम की यह छठी इकाई है। इस इकाई का संबंध यात्रा लेखन से है। इसमें यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का परिचय दिया गया है। सबसे पहले इस बारे में विचार किया गया है कि एक अच्छे यात्रा लेखक में क्या विशेषताएँ होनी चाहिए, उसके बाद अपनी रुचि, उद्देश्य और लेखन की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए यात्रा स्थल का चयन कैसे किया जाए, इसका उल्लेख किया गया है। यात्रा आरंभ करने से पूर्व किस तरह का अध्ययन करना चाहिए, क्या तैयारी करनी चाहिए, क्या–क्या सामान साथ ले जाना चाहिए। यात्रा के दौरान लेखन की पूर्व तैयारी के तौर पर क्या–क्या नोट करना चाहिए, इन सब बातों पर भी विचार किया गया है।

यात्रा की समाप्ति के बाद अपनी समस्त सामग्री का संयोजन करने और लेखन के लिए संपादित करने के बारे में भी बताया गया है। यात्रा लेख के आरंभ, मध्य एवं अंतिम भाग के लेखन के बारे में उदाहरण सहित विचार किया गया है। उपर्युक्त भाषा–शैली के बारे में कुछ बातें हैं। फोटो आदि के उपयोग का ढंग भी बताया गया है। आलेख का आकर्षक शीर्षक कैसे दिया जाए, इस पर भी चर्चा की गई है। हमने कोशिश की है कि आपको यात्रा लेखन के सभी पक्षों के बारे में ठोस उदाहरणों द्वारा समझाएँ ताकि लिखने में मदद मिल सके। बोध प्रश्नों और अभ्यासों द्वारा आप अपनी लेखन क्षमता का विकास कर सकेंगे।

6.2 यात्रा लेखक की योग्यता

यात्रा लेखक में कुछ विशेष तरह की योग्यताओं का होना आवश्यक है। सबसे पहले तो उसे पर्याप्त सामान्य ज्ञान होना चाहिए क्योंकि यात्रा के दौरान उसे बहुत–सी ऐसी चीजें देखने–जानने को मिल सकती हैं जिनकी पूर्व जानकारी के बिना वह उनका महत्व नहीं बता सकेगा। मसलन, अलग–अलग क्षेत्रों की प्रकृति के अंतर के अनुसार वहाँ पैदा होने वाले पेड़–पौधे भी अलग–अलग होते हैं। यात्रा लेखक को प्रकृति के इन विभिन्न रूपों की जानकारी होनी चाहिए। पहाड़ों की यात्रा के दौरान भिन्न–भिन्न तरह के पेड़–पौधे मिलते हैं। अगर हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते तो उनका न तो वर्णन कर सकते हैं और न उनका महत्व बता सकते हैं। किसी ऐतिहासिक स्मारक की यात्रा के समय हमें उसके इतिहास के बारे में काफी जानकारी होनी चाहिए।

दूसरी विशेषता यात्रा लेखक में यह होनी चाहिए कि वह वस्तुओं का सूक्ष्म पर्यवेक्षण (Observation) कर सके। प्रकृति का सौंदर्य, लोगों की स्वभावगत विशेषताएँ, स्मारकों की विशिष्टता की पहचान तभी संभव है जब आपमें उनकी बारीकी से निरीक्षण करने की क्षमता हो। सामान्य आदमी के लिए सभी समुद्र एक से होते हैं परंतु एक प्रतिभाशाली लेखक उनके अंतर को न केवल आसानी से पहचान लेता है, वरन् उनके फर्क को सुंदर ढंग से शब्दों में बांध भी देता है। यही नहीं, यात्रा के दौरान मिलने वाले लोगों का भी सूक्ष्म अवलोकन कर उनका प्रभावशाली शब्द–चित्र प्रस्तुत करने से यात्रा वृत्तांत को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। एक उदाहरण देखिए –

''जंगबहादुर का चेहरा भी अपने छोटेपन के प्रति इतना सतर्क था कि उसे देखकर किसी पौराणिक मनुज का स्मरण हो आता था। गोल–मटोल, कुछ पुष्ट शरीर वाले धनिया की आकृति भी उसके स्वभाव के अनुरूप थी। विरल भूरी भौंहों की सरल रेखा

और छोटी नाक की कुछ नुकीली नोक उसकी सरलता का भी परिचय देती थी और तेजस्विता का भी। ओठों का दाहिना कोना कुछ ऊपर की ओर खिंची–सा रहता था जिससे उसके मुख पर मुस्कराने का भाव स्थायी हो गया था। रंग की स्वच्छता और त्वचा की चिकनाहट से प्रकट होता था कि कुली जीवन की सारी कठोरता उसने अभी नहीं झेली है। टाट के पुराने पैजामे और जीन के फटे कोट ने उसे पराजित सिपाही की भूमिका दे डाली थी उसके मुख के भाव के साथ विरोधाभास उत्पन्न करती थी।''

(महादेवी वर्मा :पर्वत पुत्र)

यात्रा लेखक की स्मरण शक्ति भी तीव्र होनी चाहिए ताकि दिन भर यात्रा के दौरान जो कुछ वह देखे–जाने, उसे याद करके रात को सोने से पहले डायरी में लिख सके। यह तभी संभव है जब सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता के साथ उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी हो। यात्रा लेखक को मिलनसार, विनम्र और तीव्र बुद्धि वाला होना चाहिए। यात्रा के दौरान भिन्न–भिन्न लोगों से मिलने–जुलने का अवसर मिलता है और इनसे वह कई महत्वपूर्ण बातें जान सकता है जिनका उपयोग यात्रा वृत्तांत में किया जा सकता है। लेकिन ऐसी बातें तभी प्राप्त की जा सकती हैं जब अपरिचितों के साथ शीघ्र संबंध बढ़ा सकने, उनसे सार्थक बातचीत करने और अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर उनसे महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करने की क्षमता हो।

यात्रा लेखक को साहसी और जोखिम में न घबराने वाला भी होना चाहिए। उसे कठिन परिस्थितियों में भी अपनी यात्रा अनवरत जारी रख सकने वाला होना चाहिए। इस तरह की कुछ योग्यताओं के बिना बेहतर यात्रा लेखन करना संभव नहीं है।

6.3 यात्रा–स्थल का चयन

यात्रा के लिए वैसे तो सभी जगहें उपयुक्त होती हैं क्योंकि यह लेखक पर निर्भर करता है कि वह अपनी यात्रा को कितना प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करता है। फिर भी यात्रा–स्थल का चयन करते हुए कुछ खास बातों को ध्यान में रखना चाहिए। आप जिनके लिए यात्रा लेखन कर रहे हैं, उन पाठकों की रुचि किन स्थलों में ज्यादा होगी, इस बात को अवश्य दृष्टि में रखना चाहिए। आमतौर पर लोग उन स्थानों के बारे में पढ़ना चाहते हैं जिनकी यात्रा करने की इच्छा तो वे रखते हैं; पर यात्रा करने का अवसर उन्हें अभी तक नहीं मिला है या फिर वे ऐसे यात्रा विवरणों को पढ़ना चाहते हैं जिसमें उन्हें साहसिक अभियानों का रोमांचकारी आनंद मिले। वे उन जगहों का भी विवरण पढ़ना चाहते हैं, जिनकी यात्रा उनके लिए संभव है। साहित्यिक यात्रा वृत्तान्तों से एक अलग तरह का आनंद मिलता है और उनके प्रति भी पाठकों की रुचि होती है। इस प्रकार यात्रा स्थल का चयन कई आधारों पर किया जा सकता है। यात्रा स्थल का चयन करते हुए आप यात्रा की प्रासंगिकता और स्वयं अपनी रुचि और विशेषज्ञता का भी ध्यान रखें ।

6.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

यात्रा लेखन की ओर उन्हीं को प्रवृत्त होना चाहिए जिन्हें यात्राओं में आनंद आता हो। नयी जगहों में जाना, वहाँ के लोगों, रीति–रिवाजों, परपंराओं, प्रकृति के विविध रूपों आदि में रुचि रखने वाला व्यक्ति एक अच्छा पर्यटक हो सकता है और एक अच्छा पर्यटक ही एक अच्छा यात्रा लेखक बन सकता है। इसके अतिरिक्त यह भी जरूरी है कि यात्रा आप जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर कर रहे हैं, उसके लिए आप में पर्याप्त

क्षमता और योग्यता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, आप विज्ञान, पर्यावरण या इतिहास से संबंधित किसी विशेष उददे्श्य से यात्रा कर रहे हैं तो आपमें उसको समझने की योग्यता होनी चाहिए। जैसे, अंडमान में कई आदिवासी जातियाँ उन जातियों की जीवन पद्धति भिन्न तरह की है। लेकिन इस भिन्नता को इस परिप्रेक्ष्य में तभी समझ सकते हैं जब हमें आदिवासी लोगों के रहन–सहन, विचारों का ज्ञान हो। यहां ऐसे ही एक यात्रावृत्त का एक अंश उद्धृत कर रहे हैं। आप स्वयं देखेंगे कि लेखक निम्नलिखित बात इसलिए लिख सका कि उसे इसका पूर्व ज्ञान था–

''तमाम आदिम समाजों का अपना एक विज्ञान और चिकित्सा–तंत्र रहा है, जो हमें भले ही जड़ी–बूटी, झाड़–फूंक और अंधविश्वासों पर आधारित जान पड़े। उसकी पद्धति उनके अपने परिवेश से उपजी हुई होती है और वह अवैज्ञानिक नहीं होता। मसलन, निर्वस्त्र रहने वाले ओंगी मच्छरों और जहरीली मक्खियों से बचने के लिए अपने शरीर पर सफेद मिट्टी का लेप करते हैं, जो उनकी काली त्वचा और तीखी धूप के बीच एक कवच का भी काम करता है। शहद निकालने से पहले वे कुछ खास पत्तियाँ खाते हैं जिससे मक्खियों का डंक बेअसर हो जाता है। बुखार और दर्द से छुटकारा पाने के लिए शरीर पर लाल मिट्टी का लेप किया जाता है।''

(आधुनिक और आदिम समाज – मंगलेश डबराल, जनसत्ता, 6 मई 1990)

इस तरह की बातें पाठकों को कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी देती हैं। इसलिए यह जरूरी है कि लेखक का सामान्य ज्ञान विस्तृत हो, यात्राओं में उसकी गहरी रुचि हो, जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर वह यात्रा कर रहा है, उसके अनुभव की उसमें क्षमता हो।

6.3.2 यात्रा की प्रासंगिकता और महत्व

यात्रा लेखन एक ऐसा विषय है जिसके बारे में लोग हमेशा पढ़ने को उत्सुक रहते हैं फिर भी लेखक को यात्रा स्थल चुनते हुए उसके महत्व और प्रासंगिकता का ध्यान रखना चाहिए। पाठक प्रायः अनजानी और अपरिचित जगहों के बारे में पढ़ने के लिए उत्सुक रहते हैं, जैसे यूरोप–अमेरिका की यात्राओं के बारे में बहुत कुछ छप चुका है लेकिन अफ्रीका, एशिया, लातिनी अमेरिका आदि महाद्वीपों के छोटे–छोटे देशों की यात्राओं के बारे में पाठक उत्सुकता से पढ़ेंगे। वहाँ की प्रकृति, लोग, इतिहास, संस्कृति आदि के बारे में अगर कोई संस्मरणात्मक यात्रावृत्त छपता है तो बहुत से लोगों के लिए वह एक नया अनुभव होगा। इसी तरह ऐसे प्रदेशों (जैसे दक्षिण ध्रुव या सहारा का रेगिस्तान) के बारे में पढ़ना भी कम रोमांचक नहीं होता है जहाँ की जलवायु और वातावरण नितांत भिन्न प्रकार के होते हैं। यात्रा लेखन के लिए ऐसे विषय भी लिये जा सकते हैं जो चिरपरिचित स्थलों के नये पक्ष उभार सकें। जैसे, केरल की यात्रा में वहां के जलमार्गों को केंद्र में रखकर वृत्तांत लिखा जा सकता है। प्रसिद्ध कथाकार काशीनाथ सिंह ने अपनी जापान यात्रा का संस्मरण काफी अलग ढंग से लिखा था। औद्योगिक प्रगति और संपन्नता के सर्वपरिचित रूप से बाहर निकालकर जापान की बिल्कुल भिन्न तस्वीर उन्होंने पेश की थी।

''यहाँ से थोड़ी दूर पर एक पार्क है। ओसाका पहुँचने पर हिंदी कथाकार और ओसाका में विजिटिंग प्रोफेसर भाई लक्ष्मीधर मालवीय बोले, 'बंधु'! मैं चाहता था, आप वहाँ से जापान देखें। उस पार्क में हर सुबह दिहाड़ी मजदूरों की भीड़ लगती है। सुबह छह बजे के आसपास वहाँ ठेकेदार आता है। बंधुवर, आपने भारत में कसाइयों

*को बकरे खरीदते हुए देखा होगा। जिस तरह कसाई बकरे की राने, पुट्ठे, सीना, टो कर, दबाकर, उठाकर वजन लेकर गोश्त की कीमत लगाता है। उसी तरह ठेकेदार अपनी जरूरत के मजदूर चुनता है। उसकी पसलियों में उंगली कोंचकर, कंधे ठोककर, हाथ के पंजे और कलाइयां मसल कर ठेकेदार बूढ़े, अधेड़, सुकुमार, साफ–सुथरे तुदियल लोगों को अलग छांटता जाता है और वे काम के लिए घिघियाते हैं, गिड़गिड़ाते है, झगड़ा करते हैं, मरने–मारने पर उतारू हो जाते हैं (**हर जापानी परेशान चुप उदास है**– काशीनाथ सिहं, रविवार, 15–21 अगस्त 1982) इसलिए महत्वपूर्ण यह है कि आप यात्रा के लिए कोई भी जगह चुनें, परंतु यात्रा–वृत्त को मार्मिक, प्रासंगिक और उद्देश्यपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करें।''*

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) यात्रा लेखक में कौन–कौन सी योग्यताएँ होनी चाहिए? तीन योग्यताओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यात्रा–स्थल के चयन के कुछ प्रमुख आधार तीन पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) यात्रा लेखन को किस प्रकार महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है? उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 सामग्री का संकलन

यात्रा लेखन के लिए यह जरूरी है कि आप यात्रा से पूर्व कुछ आवश्यक तैयारी करें और यात्रा के दौरान कुछ आवश्यक चीजें साथ रखें। जहाँ की यात्रा आप करेंगे,

उसके बारे में आपको पहले से आवश्यक अध्ययन कर लेना चाहिए। नोटबुक, डायरी, कैमरा आदि चीजें साथ रखनी चाहिए। इन्हीं के बारे में हम इस भाग में विचार–विमर्श करेंगे।

6.4.1 यात्रा–पूर्व अध्ययन

आपने जो स्थल यात्रा के लिए चुना है उसके बारे में पहले से जानकारी एकत्र कर लेनी चाहिए। उस जगह की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, वहाँ का इतिहास, लोगों का रहन–सहन, वेशभूषा, भाषा, रीति–रिवाज, धर्म आदि के बारे में अगर आपने पहले से पढ़ रखा है तो आपको वहाँ की स्थितियों को समझने में काफी मदद मिलेगी। कई बार इस तरह के अध्ययन से उस जगह की एक अच्छी–खासी तस्वीर हमारे दिमाग में पहले से बन जाती है। हम उसी के अनुकूल बातें वहाँ देखने की आशा रखते हैं, लेकिन ऐसा ही हो, यह जरूरी नहीं है। आप नितांत नयी चीजें भी वहाँ पा सकते हैं जिन्हें आप सही परिप्रेक्ष्य में तभी समझ पाएंगे जब आपको उस जगह के बारे में पहले से बहुत–सी बातें मालूम हों एक उदाहरण लें। प्रसिद्ध हिंदी कथाकार स्वर्गीय भीष्म साहनी कुछ वर्ष पूर्व वियतनाम गये। तब वियतनाम ने कड़े संघर्ष के बाद विदेशी हमलावरों से मुक्ति पाई थी। छोटा–सा देश होते हुए भी वियतनाम ने अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश को भागने के लिए मजबूर कर दिया था। जब भीष्म साहनी वियतनाम गये तो वहाँ के लोगों की एक तस्वीर पहले से उनके दिमाग में बनी हुई थी। लेकिन जब उन्होंने वहाँ के लोगों को देखा तो वे बिल्कुल भिन्न नजर आए। इससे उन्हें कई नई बातें समझने को मिलीं।

''मैं कुछ ठगा–ठगा सा महसूस करने लगा हूँ। यह वह वियतनाम तो नहीं जिसकी मैंने कल्पना की थी। ख्याल था लोग सैनिकों जैसे चुस्त–दुरुस्त होंगे, जगह–जगह उस लंबे युद्ध के घाव देखने को मिलेंगे, जिसमें देशवासी जूझते रहे हैं, एक तरह की मुस्तैदी और तनाव और कर्मठता देखने को मिलेगी। मुट्ठियाँ भींच कर काम करने वाले लोग मिलेंगे। पर यहाँ तो सब अलसाया–अलसाया–सा है। जैसे हम लोग छुट्टी मनाने के लिए किसी सैरगाह में चले आए हों, कहीं कोई टूटी हुई इमारत नहीं देखी, किसी ने रास्ते भर किसी युद्ध के स्मारक की ओर इशारा नहीं किया। लगता है जैसे वहाँ पर कभी युद्ध हुआ ही नहीं हो।''

(वियतनाम की यात्रा – भीष्म साहनी, साक्षात्कार, जनवरी–फरवरी, 1983)

6.4.2 यात्रा की तैयारी

यात्रा लेखक को यात्रा पर जाने से पूर्व पर्याप्त अध्ययन तो करना ही चाहिए, उस यात्रा के दौरान होने वाले अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए डायरी भी अवश्य रखनी चाहिए। डायरी में प्रकृति सौंदर्य, भौगोलिक स्थिति, लोगों की भाषा, वेशभूषा, खान–पान, व्यवहार, लोक कलाएँ, क्षेत्र का इतिहास; वर्तमान, आर्थिक, सामाजिक–राजनीतिक दशा, लोगों से बातचीत आदि का विवरण तारीखवार नोट करने चाहिए। ताकि जब यात्रा वृत्तांत लिखने बैठें तो आपके पास पर्याप्त सामग्री हो। यात्रा में किसी तरह की कठिनाई न आए, इसलिए यात्रा मार्ग का नक्शा भी पास में होना चाहिए। यात्रा लेखन का महत्वपूर्ण अंग है – 'छायाचित्र' इसके लिए आपके पास अच्छा कैमरा होना चाहिए जिसका बेहतरीन संचालन करना आना चाहिए। अगर कोई पेशेवर फोटोग्राफर आपका सहयात्री हो तो और भी अच्छा। पहाड़ या ठंडे प्रदेशों के लिए पर्याप्त गर्म कपड़े साथ में हों। आवश्यक दवाएं भी रखें। लेकिन यह अवश्य

ध्यान रखिए कि आपके पास इतना बोझ न हो जाए कि उसे उठाकर चलना मुश्किल हो।

अगर आप किसी ऐसे क्षेत्र की यात्रा कर रहे हों जहाँ की भाषा न जानते हों तो दुभाषिए की सहायता लेनी चाहिए। ये कुछ आवश्यक बातें हैं जो आपको यात्रा आरंभ करने से पूर्व अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए।

6.4.3 तथ्यों का संकलन

यात्रा के दौरान आप अपनी डायरी में प्रत्येक दिन का विवरण नोट करें। विवरण नोट करते समय केंद्र में तो अपने उद्देश्य को रखिए, परंतु यह भी ध्यान रखिए कि कोई महत्वपूर्ण बात छूट न जाए। यात्रा के दौरान आपको कई ऐसे अनुभव हो सकते हैं जो बहुत मामूली से लगते हों पर जिनका अर्थ महत्वपूर्ण हो। आमतौर पर अच्छा यात्रा लेखन वही माना जाता है जिसमें उस क्षेत्र के बारे में विविध तरह की सूचनाएँ भी दी गई हों। अंडमान से संबंधित जिस यात्रा वृत्तांत को हमने उद्धृत किया है उसमें लेखक ने अंडमान की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक सौंदर्य, इतिहास और वहाँ के आदिवासियों की संस्कृति, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा आदि के बारे में भी बहुत सी बातें बतायी हैं। इससे वह वृत्तांत हर दृष्टि से परिपूर्ण हो गया है। ये बातें हम तभी लिख सकते हैं जब हम यात्रा से पूर्व इनके बारे में कुछ अध्ययन कर लें और यात्रा के दौरान प्राप्त जानकारियों को उससे मिलाते रहें।

6.4.4 अन्य सामग्री

यात्रा के दौरान लिए गए छायाचित्रों का अपना महत्व है। यात्रा के दौरान पड़ने वाले खूबसूरत स्थलों के चित्र लेने चाहिए और लोगों के चित्र भी, जिनसे उनके रहन–सहन आदि का पता चल सके। ऐतिहासिक स्मारकों तथा यात्रा लेखन के उद्देश्य पर प्रकाश डालने वाले पक्ष को उभारने वाले चित्र लिये जा सकते हैं। चित्र स्पष्ट और सुंदर हों और ऐसे कोण में खींचे जाएँ जो उस जगह की सुंदरता को बढ़ाने वाले हों। यात्रा लेखन के साथ छायाचित्रों का उपयोग बहुत सोच–समझकर करना चाहिए ताकि यात्रा वृत्तांत की सुंदरता और मूल्यवत्ता दोनों बढ़े। फोटो के अलावा किसी अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज आदि की फोटो प्रतिलिपि भी दी जा सकती है।

6.5 सामग्री का संयोजन और संपादन

यात्रा से पूर्व किये गये अध्ययन और यात्रा के दौरान लिखी गयी टिप्पणियों और अन्य एकत्र की गई सामग्री के आधार पर अपनी यात्रा का वृत्तांत लिखिए। इसके लिए जरूरी है कि आप अपनी सामग्री का ठीक से अध्ययन करें और यात्रा लेखन की एक रूपरेखा बना लें। उसी के अनुसार अपना लेखन आरंभ करें। यात्रा लेखन में केवल तथ्यों का विवरण होगा तो वह प्रभावशाली नहीं बनेगा। इसके लिए जरूरी है कि आप अपने विवरण को रोचक बनाएँ। एक तरीका यह है कि आप बस यह बताते रहें कि हम पहले अमुक जगह गये, फिर वहाँ से दूसरी जगह गये। वहाँ यह यह देखा और इस तरह घूमते–घूमते हमने अपनी यात्रा समाप्त की। यात्रा की ऐसी विवरणिका दिलचस्प नहीं होगी। लोग कुछ ऐसा जानना चाहते हैं जिसमें जीवन की धड़कनें हों, पाठक को ऐसा महसूस हो जैसे वह खुद यात्रा कर रहा है। यात्रा के दौरान जो कुछ भी आपने अनुभव किया उसे कागज पर उतारते हुए स्वयं आपका व्यक्तित्व उसमें

अभिव्यक्त होना चाहिए। यात्रा लेखन में तटस्थता और नीरसता से वर्णन शुष्क हो जाता है। यात्रा के रोचक वर्णन का एक उदाहरण देखिए–

''सुंदरनगर एक प्रशस्त घाटी है। चारों ओर पहाड़ों से घिरी। कई किलोमीटर का यह इलाका अपना ही इलाका लगता है। अपनी ही तरफ जैसे खेत, खलिहान, मकान, मैदान। कुछ फसलें कट चुकी हैं, कुछ कटने को तैयार। कुछ खेत जुत चुके हैं, कुछ जुतने के लिए तैयार। यह मिट्टी की महिमा है। वह जहाँ भी होती है बीज को धारण करती है। जन्म देती है वनस्पतियों को, हरियाली को विकसित करती है। धरित्री है वह अनन्दा है, अन्नपूर्णा है। धरती माँ का यह अन्नपूर्णा रूप शिखरों से ज्यादा खूबसूरत होता है। जैसे स्त्री पुरुष शरीर से। यह मिट्टी जहाँ भी होगी, धूल होगी वहाँ, कीचड़ होगी, गंदगी होगी लेकिन वहीं से फूटेंगे जीवन के अंकुर।''

**(जो बह रही है जिजीविषा की तरह–
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साक्षात्कार, जनवरी–मार्च, 1987)**

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) यात्रा आरंभ करने से पूर्व अध्ययन करने से क्या लाभ हैं? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यात्रा के दौरान लेखन में सहायक कौन–कौन सी सामग्री पास में रखनी चाहिए और क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

3) यात्रा लेखन के साथ छायाचित्र देने के लाभ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 यात्रा लेखन की प्रस्तुति

यात्रा लेखन का उद्देश्य क्या है, इसी से यह तय होगा कि यात्रा लेखन का स्वरूप क्या हो। अगर आप व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन करना चाहते हैं तो आपके लेखन का स्वरूप भिन्न होगा। वहाँ सूचनाओं का महत्व होगा, साथ ही पर्यटकों को आकृष्ट करने वाली बातें केंद्र में रहेंगी। सूचनापरक यात्रा लेखन का उद्देश्य पर्यटन स्थलों के बारे में पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करना तथा यात्रा के रोमांच और आनंद में पाठकों को भागीदार बनाना होता है इसलिए उसका लेखन अलग ढंग का होगा। विशिष्ट और साहित्यिक यात्रा लेखन भी अलग–अलग शैलियों में प्रस्तुत होंगे। आइए, इन सब पर विचार करें।

6.6.1 आरंभ

व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन में सूचनाओं का केंद्रीय महत्व होता है लेकिन सूचनाएँ ऐसी होंगी जो पर्यटकों को यात्रा में सहायता करें। यहाँ लेखक एक तरह से गाइड का काम करता है जो आपको पर्यटन स्थल के बारे में रोचक बातें बताकर आपका उत्साह बढ़ाता है। वह कोई नकारात्मक बात नहीं बताता। व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन का उद्देश्य पर्यटकों की सहायता करना होता है और संक्षेप में सारी सामग्री प्रस्तुत करनी होती है। इसीलिए लेखक को आरंभ में ही अपनी बात सीधे ढंग से रख देनी होती है।

सूचनापरक यात्रा लेखन का आरंभ भी सूचनाओं के साथ किया जा सकता है। आमतौर पर इस तरह के यात्रा वृत्तांत पत्र–पत्रिकाओं के लिए लिखे जाते हैं, इनमें आप आरंभ यात्रा की शुरूआत से ही कर सकते हैं –

''मद्रास से करीब डेढ़ सौ किलोमीटर दूर फ्रांसीसी संस्कृति का केंद्र रही पांडिचेरी जाने का एक रास्ता पल्लव साम्राज्य के प्राचीन अवशेषों के किनारे से भी जाता है। समुद्र तट से लगे सर्पिल रास्ते से गुजरते हुए पल्लव साम्राज्य का बंदरगाह और द्रविड़ शैली के मंदिरों की बुनियाद माना जाने वाला 'महाबलिपुरम' यात्रियों के लिए पहला पड़ाव है।''

**(समुद्र उर पर शिल्प का एक नगर अंबरीष कुमार,
जनसत्ता, 2 सिंतबर 1990)**

कभी–कभी यात्रा लेखन का आरंभ पर्यटन स्थल के परिचय से भी किया जाता है और यात्रा के आरंभ का विवरण उसके बाद प्रस्तुत होता है –

''भारत की मुख्य भूमि के दक्षिण पश्चिम कोने पर स्थित छोटे से राज्य केरल में प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत खजाना। 38,863 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले इस प्रदेश को तीन भागों उच्च भूमि, मध्य भूमि और निचली भूमि में बांटा जा सकता है। इस छोटे से प्रदेश की जनसंख्या 1981 की जनगणना के अनुसार दो करोड़ 84 लाख 680 है। आबादी के घनत्व के हिसाब से यह 655 बैठता है अर्थात् प्रत्येक किलोमीटर पर सर्वाधिक लोग। इतनी आबादी के बावजूद यह प्रांत धरती पर स्वर्ग–सा लगता है, तो सिर्फ इसलिए की प्रकृति ने यहाँ खुले हाथों से सुंदरता लुटाई है।''

**(हरियाली सिर्फ हरियाली केरल का पर्याय है।
निशा श्रीवास्तव, नवभारत टाइम्स, 2 दिसंबर 1990)**

यात्रा के आरंभ के इस उदाहरण में आप देखेंगे कि यात्रा का वर्णन सीधे–सादे ढंग से पेश किया गया है, लेकिन जब साहित्यकार यात्रा वृत्तांत आरंभ करता है तो उसकी प्रस्तुति में कलात्मकता स्वतः ही आ जाती है।

''हवाई जहाज वियतनाम की ओर बढ़ रहा है। खिड़की के बाहर आकाश का असीम प्रसार, नीचे तैरते घुमड़ते बादल। कुछ भी कह पाना कठिन है कि हम कहाँ पर हैं, किस देश की धरती के ऊपर से उड़ते जा रहे हैं।''

(वियतनाम की यात्रा, भीष्म साहनी)

साहित्यकार अपने यात्रा वृत्तांत के लिए कई तरह की शैलियाँ अपनाते हैं। निम्नलिखित यात्रा वृत्तांत को पत्र–शैली में लिखा गया है।

(मनाली, हिमाचल प्रदेश 16.10.1985)

प्रिय चितरंजन जी,

''जिस स्थान से आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूँ वह भारत के सुंदरतम पर्वत स्थान में से एक है। हमारे यहाँ 'पहाड़ों की रानी' के नाम से कई स्थान मशहूर हैं जैसे मसूरी या नैनीताल या रानीखेत आदि। लेकिन मनाली को मैं 'पहाड़ों की राजकुमारी' कहना चाहूँगा। हिमालय कन्या 'विपाशा' बह रही है, मेरे सामने। मेरे साथ। नहीं, मुझसे होकर बह रही है... नहीं मुझको छोड़कर बह रही है। धड़कती खिलखिलाती भागी जा रही है समय की तरह... अनंत की ओर..''

(जो बह रही है जिजीविषा की तरह–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साक्षात्कार, जनवरी–मार्च 1987)

कभी–कभी यात्रा लेखन का आरंभ किसी लेखक, कलाकार या महान व्यक्ति के उद्धरण से भी किया जाता है और कभी किसी सहयात्री के साथ बातचीत द्वारा। विशिष्ट उद्देश्य से प्रेरित लेखन का आरंभ विषय के परिचय से किया जा सकता है–

''ट्रैकिंग–आज से छह साल पहले तक यह शब्द भारतीय परंपरा और भारतीय परिवेश के लिए बिल्कुल नया था। लेकिन आज परंपरागत पर्यटन (अर्थात् साइट सीईंग) से हटकर साहसिक और रोमांचक किस्म के पयर्टन के प्रति भारतीयों की बढ़ती रुचि ने बड़े ही कम समय में देश के कोने–कोने में ट्रैकिंग को बेहद लोकप्रिय बना दिया है। गर्मियाँ आई नहीं कि हजारों की तादाद में युवक–युवतियाँ, बच्चे तथा बुजुर्ग पीठ पर 'रकसैक' (ट्रैकिंग के लिए सामान ले जाने वाला एक खास थैला) लादकर हजारों फुट ऊँचे पहाड़ों पर कूच करने लगते हैं–ट्रैकिंग के लिए।''

(भुलाए नहीं भुलते वे मधुर रोमांचक क्षण, जगजीत सिंह, नवभारत टाइम्स, 20 अप्रैल 1991)

यात्रा वृत्तांत का आरंभिक अंश आप किसी भी रूप में शुरू कर सकते हैं, पर यह अवश्य ध्यान रखिए कि आपके लेखन का आरंभ सूचनाप्रद और रोचक हो।

6.6.2 मध्य

यात्रा लेखन का आरंभ आप चाहे जिस शैली में करें, उसमें यात्रा के आरंभ का वर्णन जरूर होगा या फिर यात्रा स्थल से संबंधित कोई महत्वपूर्ण जानकारी। केवल

साहित्यिक यात्रा, वृत्तांत में ही आरंभिक अंश भिन्न–भिन्न तरह के होते हैं। लेकिन यात्रा लेखन के मध्य भाग में तो यात्रा के विवरण को ही प्रस्तुत किया जाता है। यह विवरण दो ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। एक तरीका तो यह है कि आप यात्रा का क्रम से विवरण दें, यानी यात्रा के आरंभ से अंत तक तारीखवार विवरण प्रस्तुत करते जाएँ। आपने यात्रा का आरंभ कैसे किया, फिर कहाँ गये, उसके बाद कहाँ और अंत में यात्रा की समाप्ति कैसे हुई। इस तरीके को आप सामान्य वितरणात्मक ढंग से डायरी या पत्र शैली में भी प्रस्तुत कर सकते है। एक उदाहरण देखिए–

''पहली नवंबर की शाम और जापान की धरती। हवाई अड्डे से कावासाकी के लिए रवाना होते समय श्री शिगेओ आराकि ने कार में कहा, बरे (बड़े) भाई, भारत से जो भी आते हैं, भारतीयों को ढूंढते हैं।.....'

वातानुकूलित कार तेजी से भाग रही है। मैं खिड़कियों से अंधेरे में धरती, पेड़, पहाड़ इमारतें देखने की कोशिश कर रहा हूँ। यह नवंबर की दूसरी तारीख थी। नरीता हवाई अड्डे से 'हीवा प्लाजा होटल' तीन घंटे का रास्ता। सड़क के दोनों ओर दूर–दूर तक कोई आदमी नहीं।

रात भर महिला की बातें मेरे कानों में गूंजती रहीं। एक दिन बाद (4 नवंबर) कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन था,

जिसमें मुझे फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ (पाकिस्तान) और न्यूगी वा थियागं ओ (अफ्रीका) को जन संस्कृतियों की सहखोज पर भाषण देना था।''

(हर जापानी परेशान चुप उदास है।

(काशीनाथ सिंह, रविवार, 21 अगस्त 1982)

इससे भिन्न तरीका यह है कि आप पर्यटन स्थल के संबंध में एक–एक पक्ष के बारे में बताते चले जाएँ। जैसे वहाँ के इतिहास, संस्कृति, राजनीति, विकास आदि विवरण प्रस्तुत करें। अंडमान से संबंधित यात्रा वृत्तांत इसी ढंग से लिखा गया है। लेखक ने आरंभ में अंडमान का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत किया है, फिर उन द्वीपों का इतिहास, इसके बाद लेखक अंडमान द्वीप समूह के वर्तमान में प्रवेश करता है और वहाँ के लोगों और उनसे जुड़े विभिन्न पक्षों के बारे में रोचक ढंग से बताता चलता है। इन दोनों तरीकों से भिन्न वृत्तांत संस्मरण के रूप में विवरण प्रस्तुत करता है। महादेवी वर्मा का 'पर्वत पुत्र' या निर्मल वर्मा का **'अंग्रेजों की खोज में'** या श्रीकांत वर्मा का **'मानवीय स्वतंत्रता की तलाश'** इसी तरह के यात्रा वृत्तांत हैं।

''अगर मैं लंदन में न आता, उनके साथ एक शहर में न रहता, तो शायद इन सब पहेलियों के बारे में कभी न सोचता शायद इसमें मैं अकेला नहीं हूँ। दूसरे भारतीय प्रवासी भी अपने–अपने ढंग से इसके बारे में सोचते हैं इसका अनुभव कुछ दिन पहले हुआ जब एक भारतीय मित्र ने मुझे बताया कि लंदन आकर उन्होंने सबसे पहला काम जो किया, वह अपने जूते एक अंग्रेज मोची से साफ करवाये थे। उनके लिए यह काफी प्रीतिकर अनुभव था। मैं उनके संतोष और सुख को समझ सकता हूँ, क्योंकि जब तक 'साहिब' मोची उनके जूतों पर पालिश करता रहा, काफी खुले और मुक्त भाव से उनके साथ बातचीत करता रहा। संभव है, मेरे इस मित्र की हरकत के पीछे 'बदला चुकाने' की हास्यास्पद भावना रही हो, किंतु अंग्रेज मोची और हिंदुस्तानी जूते

का दो मिनट का यह संबंध उन दो सौ वर्षों के दफ्तरी संबंध से मुझे कहीं अधिक मानवीय और सहज जान पड़ा, जो अंग्रेजों और भारतवासियों के बीच रहा था।''

(अंग्रेजों की खोज में – निर्मल वर्मा)

यात्रावृत्त के मध्य भाग को आप चाहे जिस शैली में लिखें, परंतु वह हो रोचक और पठनीय। शुष्क सूचनाएँ और रेलवे टाइम टेबल की तरह विवरण यात्रा वृत्तांत को अपठनीय और उबाऊ बना देता है। इससे हमेशा बचना चाहिए।

6.6.3 अंत एवं शीर्षक

यात्रा वृत्तांत के आरंभ की तरह उसका अंतिम भाग भी रोचक होना चाहिए। यात्रा का तारीखवार विवरण दे रहे हैं तो अंतिम भाग में यात्रा की समाप्ति का उल्लेख किया जा सकता है। अंतिम भाग में यात्रा के कुल प्रभाव या यात्रा के अनुभव का निचोड़ या कोई अन्य महत्वपूर्ण बात प्रस्तुत की जा सकती है।

यात्रा के अंतिम चरण में वर्णन के साथ लेखन की समाप्ति

''बहरहाल, स्लाइडिंग करते और सावधानी से बर्फ पर पाँव रखते हुए करीब डेढ़ बजे जब हमने सरपॉस पर कदम रखा, तो मंजिल पा लेने की खुशी में किसी के मुँह से यूरेका (पा लिया) निकला, तो किसी के मुंह से 'वी फॉर विक्टरी' शब्द निकले। सरपॉस पहुँच कर सभी ट्रेकर्स ने एक–दूसरे को बड़ी गर्मजोशी के साथ बधाई दी। किसी के पास मीठी गोलियाँ बची थीं, सो उसने उन्हीं से दूसरों का मुंह मीठा करा दिया। खासकर बंबई से आई बेला तो उस मौके पर बहुत ही भाव विह्वल हो उठी थी क्योंकि उसे खुद यकीन नहीं आ रहा था कि शुरू से ही ट्रैकिंग को कठिन और असंभव मानने के बावजूद वह इतनी ऊँचाई तक कैसे पहुँच गई। वह अंततः पहुँची और वह उसकी हिम्मत, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा साथी ट्रैकर्स की सहयोग की भावना के कारण संभव हो पाया था।''

(भुलाए नहीं भूलते वे मधुर रोमांचक क्षण, पूर्वोक्त)

यात्रा के प्रभाव का निचोड़

''आधुनिक मनुष्य की तरह संचय करना और संपत्ति जोड़ना और व्यापार करना उन्होंने नहीं सीखा। तब सवाल उठता है कि सभ्य कौन है? सभ्यता का दावा करने वाला हमारा समाज या प्रकृति के साथ पूरे सामंजस्य से रह रही ये जातियां? पोर्ट ब्लेयर के एक मानवशास्त्री ए. ऑस्टिन एक बुनियादी सवाल उठाते हैं कि सभ्यता क्या है? क्या खेती करना, पशु पालना, अपनी भाषा की लिपि तैयार करना, कपड़े और जूते पहनना ही सभ्यता है? क्या सभ्यता की परिभाषा नये सिरे से नहीं की जानी चाहिए?

(आधुनिक और आदिम समाज

अंडमान पर मंगलेश डबराल का यात्रा वृत्तांत, जनसत्ता, 6 मई 1990)

यात्रा लेखन का शीर्षक यात्रा की तरह ही रोचक होना चाहिए। यात्रा लेखन के शीर्षक बहुत सामान्य किस्म के भी हो सकते हैं। जैसे 'वियतनाम की यात्रा' या 'आधुनिक और आदिम समाज'। ये शीर्षक सूचनात्मक और स्पष्ट है। कुछ सांकेतिक शीर्षक भी दिये जा सकते हैं जैसे 'समुद्र में एक सभ्यता' या 'नीलगिरि की खुशबू में नीला कैनवास' पूरी तरह से प्रभावात्मक शीर्षक भी हो सकते हैं। जैसे 'भुलाए नहीं

भूलते वे मधुर रोमाचंक क्षण' या 'जो बह रही है जिजीविषा की तरह। '**लेखक – साहित्यकार वैचारिक किस्म के शीर्षक** भी देते हैं जैसे 'अंग्रेजों की खोज में' या 'मानवीय स्वतन्त्रता की तलाश' या 'मध्य रात्रि का सूर्य' आदि । शीर्षक जो भी दें वह अर्थपूर्ण और प्रभावशाली हो। बहुत लम्बे शीर्षक उपयुक्त नहीं होते हैं।

6.7 भाषा एवं शैली

जहाँ तक यात्रा लेखन की भाषा का प्रश्न है तो व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन की भाषा अधिक आलंकारिक हो सकती है जबकि सूचनापरक यात्रा लेखन की भाषा वर्णनात्मक। परंतु दोनों में ही सरसता और सहजता अवश्य होनी चाहिए। साहित्यिक यात्रा वृत्तांत में भाषा संबंधी प्रयोग की गुंजाइश अधिक होती है। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले यात्रा लेखन की भाषा के कई रूप मिलते हैं। बहुत सामान्य किस्म की वर्णनात्मक भाषा का एक उदाहरण देखिए –

''समुद्र के किनारे तक कैशुरीना के जंगल नजर आते हैं। हालांकि यह जंगल पर्यटन विभाग ने खड़े किये हैं। कैशुरीना के दो–दो पेड़ों के बीच प्लास्टिक के जाली वाले लंबे–लंबे झूले डाले गए हैं जिन पर बच्चों और जोड़ों को हर समय देखा जा सकता है। एक तरफ परंपरागत नाव खड़ी है तो दूसरी तरफ शिव मंदिर या तट मंदिर तक कुकुरमुत्ते की शक्ल में छोटी–छोटी झोपड़ियां बनाई गई हैं।''

इससे भिन्न और अधिक प्रभावशाली भाषा निम्नलिखित उद्धरण में है, यद्यपि यह भी सूचनापरक यात्रा वृत्तांत का अंश है :

''समुद्र स्नान में आपकी दिलचस्पी न हो, तो गीली रेत पर ही बैठिए, समुद्र की लहरों का आनंद लीजिए, लहरें गिनिए और बार–बार बनाइए व तोड़िए रेत के महल । अगर इससे भी दिल भर गया हो, तो आगे तक चहलकदमी करते निकल जाइए। सामने यात्री और बीच समुद्र में एक काली चट्टान है, जिस पर कुछ विदेशी, कुछ भारतीय कपड़े – सुखाते – बतियाते, परिचय लेते–देते मिलेंगे। इधर बांई ओर कुछ विदेशी किनारे रेत पर बैठे शतरंज खेलने में या 'नॉवेल' पढ़ने में तल्लीन दिखाई देंगे।''

आप स्वयं अनुभव करेंगे कि उपर्युक्त दोनों अंशो में से दूसरे अंश की भाषा अधिक प्रभावकारी है। यहाँ वर्णन में लेखक ने पाठकों से संवाद स्थापित करने की कोशिश की है। निर्लिप्त वर्णन की बजाय आत्मीय संवाद के कारण यह अंश अधिक रोचक बन पड़ा है। अगर भाषा के स्तर को इससे भी ऊपर उठाया जाए और उसमें कलात्मकता लाई जा सके तो आपका यात्रा लेखन सर्जनात्मकता से पूर्ण हो जाएगा। पूर्व उद्धृत महादेवी वर्मा, भीष्म साहनी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, काशीनाथ सिंह, निर्मल वर्मा, मंगलेश डबराल आदि के यात्रा वृत्तांतों के अंशों को पढ़ने से आपको भाषा की ऊँचाई का आभास हो जाएगा। इस स्तर के यात्रा वृत्तांत आवश्यक नहीं कि भावनात्मक या आलंकारिक हों। महत्वपूर्ण बात है वस्तुओं को देखने का उनका नजरिया। वे यात्रा के दौरान होने वाले अनुभवों के आंतरिक अर्थ तक पहुँचते हैं और उसे पाठकों तक भी पहुँचाते हैं। साहित्यकार यात्रा के दौरान निर्जीव इमारतों या प्रकृति के सौंदर्य तक ही अपने को सीमित नहीं रखते, वरन् लोगों के जीवन में भी गहरी दिलचस्पी लेते हैं और उनसे बातचीत द्वारा, उनसे संपर्क बढ़ाकर वे अपनी यात्रा को मनुष्य–मनुष्य के बीच रिश्ते का वाहक बनाते हैं। अपनी भाषा–शक्ति द्वारा वे इस पहलू को भी पाठकों के समक्ष उजागर करते हैं। यात्रा लेखन की भाषा तभी रोचक बनती है जब भाषा यात्रा

को सिनेमा के चित्रों की तरह हमारे सामने पेश कर दे। पढ़ते हुए ऐसा लगे जैसे हम स्वयं यात्रा कर रहे हों और उसका एक–एक दृश्य देख रहे हों। यात्रा लेखन के लिए मुख्य रूप से वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक एवं डायरी शैली का प्रयोग किया जाता है। इस इकाई में दिए गए उदाहरणों में आप इन शैलियों का प्रयोग देख चुके है। आप इनमें से कोई भी शैली अपना सकते हैं या कोई दूसरी शैली भी खोज सकते हैं।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) यात्रा लेखन के आरंभिक अंश को लिखने की कुछ प्रमुख विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यात्रा लेखन के मध्य भाग में विवरण देने की दो प्रमुख विधियों का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सूचनात्मक यात्रा वृत्तांत की भाषा में क्या–क्या विशेषताएँ होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

4) यात्रा लेखन का अंतिम भाग समाप्त करने का सबसे उचित तरीका आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6.8 सारांश

- इस इकाई में आपने यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का अध्ययन किया है और यह जाना है कि एक अच्छे यात्रा लेखक में क्या–क्या योग्यता होनी चाहिए। आपने जाना कि यात्रा लेखक को अध्ययनशील होना चाहिए, उसमें यात्रा के प्रति गहरी रुचि, सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि, अपरिचित लोगों से संपर्क बढ़ाने की क्षमता और तीव्र स्मरण शक्ति होनी चाहिए।

- यात्रा के उद्देश्य, महत्व और अपनी रुचि के अनुरूप ही यात्रा स्थल का चयन करना चाहिए। यात्रा आरंभ करने से पूर्व गंतव्य स्थल और उससे जुड़े क्षेत्र के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर लेना चाहिए। यात्रा के दौरान नोट बुक पास में रखनी चाहिए ताकि प्रत्येक दिन का विवरण नोट किया जा सके। साथ में एक अच्छा कैमरा भी रखना चाहिए जिससे यात्रा के खूबसूरत दृश्यों को कैमरे में कैद करके उन्हें यात्रा लेख के साथ प्रस्तुत किया जा सके। यात्रा के दौरान ज्यादा से ज्यादा सूचनाओं को संकलित करना चाहिए और लेखन से पूर्व एक रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

- यात्रा लेखन के उद्देश्य के अनुसार शैली अपनाकर यात्रा–वृत का लेखन आरंभ करना चाहिए। आरंभ में यात्रा का उद्देश्य या महत्व प्रस्तुत किया जा सकता है या यात्रा के आरंभ का अनुभव प्रस्तुत किया जा सकता है। मध्य भाग में यात्रा का रोचक वर्णन, तारीखवार प्रस्तुत किया जा सकता है। यात्रा के इस भाग को आज विभिन्न पक्षों, जैसे भौगोलिक स्थिति, प्रकृति, इतिहास आदि के रूप में भी पेश कर सकते हैं। अंतिम भाग में यात्रा की समाप्ति, यात्रा का प्रभाव या यात्रा के अनुभवों का निचोड़ प्रस्तुत करना चाहिए। शीर्षक यात्रा के किसी खास पहलू को उजागर करने या पर्यटन स्थल के सौंदर्य पक्ष को उजागर करने वाला हो सकता है।

- यात्रा लेखन के लिए आज अपने उद्देश्य के अनुसार वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक, डायरी, पत्र आदि में से कोई भी शैली अपना सकते हैं। भाषा रोचक, सरस और यात्रा के दृश्यों को चित्र की तरह स्पष्ट उभारने वाली हो। निश्चय ही इस इकाई को पढ़कर आप अपना लेखन कौशल बढ़ा सकेंगे।

अभ्यास

1) हिमालय के किसी क्षेत्र की यात्रा पर लिखने के लिए आप किस विषय को महत्वपूर्ण समझते हैं और क्यों? उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अपनी शहर की बस यात्रा का कोई रोचक संस्मरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) कुल्लू–मनाली (हिमाचल प्रदेश के पर्यटन स्थल) की यात्रा के लिए अपनी तैयारी का विवरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) इस यात्रा के दौरान आप अपनी डायरी में क्या–क्या बातें नोट करना चाहेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

5) निम्नलिखित यात्रा वृत्तान्तों में क्या फर्क है?

क) कोवलम तट पर पहुँचकर ही पता चलता है कि महानगरीय शहर और तट के बीच कितना बड़ा फर्क है। कहाँ तो सिर्फ 15 किलोमीटर दूर ही त्रिवेंद्रम शहर की भागमभाग की जिंदगी और पसीना निकाल देने वाली चिलचिलाती धूप और कहाँ नीले पानी, नर्म मुलायम रेत, शीतल छाया और हवा वाला यह तट। कहीं सात समुद्र पार से इस एक समुद्र तट के नर्म, मुलायम रेत पर धूप स्नान का आनंद लेते विदेशी सैलानी नजर आएंगे, तो कहीं कुछ समुद्र की गिरती–उठती तेज लहरों के बीच समुद्र स्नान करते हुए दिखाई देंगे और दूर कहीं रोमांचक पर्यटन के शौकीन रंग–बिरंगी पाल नौका के साथ समुद्र के थपेड़ों से टक्कर लेते हुए दिखेंगे।

ख) हनुमान चट्टी के पाँच–छह मील की जो दुर्गम और विकट चढ़ाई आरंभ हुई थी, उसका अंत एक ओर नर और दूसरी ओर नारायण नाम के पर्वतों तथा उनकी असंख्य श्रेणियों से घिरी हुई समतल भूमि में हुआ। श्वेत कमल की पंखुड़ियों के समान लगने वाले पर्वतों के बीच में निरंतर कल–कल नादिनी अलकनंदा के तीर पर बसी हुई वह पुरी हिमालय के हृदय में इच्छा के समान जान पड़ी।

वृक्ष, फूल और पत्तों का कहीं चिह्न भी नहीं था। जहाँ तक दृष्टि जाती थी। निस्पंद समाधि में मग्न तपस्विनी जैसी आडंबरहीन सूनी पृथ्वी ही दिखाई देती थी और उतने ही निश्चल तथा उज्ज्वल हिमालय के शिखर ऐसे लगते है मानो जैसे शरद् पूर्णिमा की रात्रि में पहरा देते–देते चांदनी समेत जम कर जड़ हो गये हों।

6) उपर्युक्त दोनों अंशों की भाषा–शैली की विशेषताओं की तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

6.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि

ii) अपरिचितों से संपर्क बढ़ाने की क्षमता

iii) तीव्र रमण शक्ति

2) i) विशिष्ट उद्देश्य, जैसे ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, पर्यावरणीय अध्ययन

ii) साहसिक एवं रोमांचकारी यात्रा के लिए

iii) प्राकृतिक सौंदर्य के लिए

iv) गर्मियों की छुट्टी आदि बिताने के लिए

v) ऐतिहासिक स्मारकों को देखने के लिए .

3) यात्रा लेखन का वर्णन इस ढंग से करना चाहिए कि पाठकों का पर्यटन स्थल के बारे में ज्ञान बढ़े। उनकी सौंदर्य दृष्टि का विकास हो, उन्हें यात्रा जैसा आनंद मिले और रोमांच का अनुभव हो।

बोध प्रश्न –2

1) देखिए उपभाग 6.4.1

2) नोट बुक एवं कैमरा अवश्य पास में रखना चाहिए। इनके अतिरिक्त यात्रा स्थल की जलवायु के अनुरूप सामान रखना चाहिए। बहुत अधिक बोझ यात्रा के लिए अच्छा नहीं है। कुछ जरूरी दवाएं भी पास में होनी चाहिए। अपरिचित भाषा–क्षेत्र में दुभाषिया भी साथ में होना चाहिए।

3) i) इससे यात्रा लेख का महत्व बढ़ जाता है।

ii) लोग यात्रा स्थल के सौंदर्य का अनुमान लगा सकते हैं।

iii) लोगों की वेशभूषा, कला आदि का भी परिचय मिलता है।

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 6.6.1

2) देखिए उपभाग 6.6.2

3) देखिए भाग 6.7

4) सूचनापरक यात्रा लेखन में यात्रा से प्राप्त उपलब्धि या अनुभव का निचोड़ प्रस्तुत करना उत्तम तरीका है।

अभ्यास

1) हिमालय की यात्रा प्राकृतिक सौंदर्य या पर्यावरणीय दृष्टि से की जा सकती है। इन दोनों उद्देश्यों को आपस में जोड़ा भी जा सकता है। पेड़ों के बड़े पैमाने पर कट जाने से हिमालय के सौंदर्य पर बुरा असर पड़ा है। जलवायु में भी तब्दीली आई है। इन बातों को केंद्र में रखकर अच्छा यात्रा वृत्तांत लिखा जा सकता है।

2) अगर आप दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता या अन्य किसी बड़े शहर के रहने वाले हैं तो स्थानीय बस सेवा की कठिनाइयों से अवश्य परिचित होंगे। भीड–भाड़, धक्कम–धक्का घंटों इंतजार, बस की दुर्दशा आदि को ध्यान में रखकर आप एक छोटा यात्रावृत्त लिख सकते हैं। इसके लिए आप अपनी कल्पना शक्ति का भी उपयोग कीजिए।

3) यात्रा की सामान्य तैयारी के अतिरिक्त पहाड़ी यात्रा के लिए आवश्यक सामान साथ रखना चाहिए। लेकिन अधिक बोझ पहाड़ की यात्रा में परेशानी का कारण बन जाता है।

4) i) प्राकृतिक सौंदर्य और उसमें आए परिवर्तन

   ii) जलवायु और उससे आये परिवर्तन

   iii) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

   iv) स्थानीय संस्कृति और लोगों का व्यवहार

   v) आर्थिक दशा और विकास

   vi) राजनीति, शिक्षा आदि अन्य महत्वपूर्ण पक्ष

5) क) सूचनापरक वर्णनात्मक यात्रा लेखन

   ख) साहित्यिक यात्रा लेखन

   क्यों का विश्लेषण स्वयं करने का प्रयास कीजिए।

6) i) वर्णनात्मक शैली–भाषा सरल, वर्णनात्मक परंतु प्रभावशाली।

   ii) संस्मरणात्मक शैली–भाषा भावनात्मक और साहित्यिक ऊंचाई लिए ।